जीवन दाता हिमालय

जीवन दाता हिमालय

जीवन दाता हे हिमालय चिरस्थाई बने रहो
है प्रकृति की शोभा तुमसे
है वर्षा की धार तुम्हीं से
जीवन का आधार तुम्हीं से
दुनिया का श्रृंगार तुम्हीं से
जीवन दाता हे हिमालय चिरस्थाई बने रहो
बर्फ की चादर ओढ़े हो तुम
गंगा की है धार तुम्हीं से
औषधियों का धाम तुम्हीं हो
दुनियाँ को है आश तुम्हीं से
जीवन दाता हे हिमालय चिरस्थाई बने रहो
सागर की लहरें भी तुमसे
पवनों का अवरोध तुम्हीं हो
त्राहि-त्राहि जब होती जग में
तब वर्षा की धार तुम्हीं हो
जीवन दाता हे हिमालय चिरस्थाई बने रहो
फसलों की खुशहाली तुमसे
आसमान की लाली तुमसे
कृषि प्रधान भारती धरा के
कृषकों के भगवान तुम्हीं हो
जीवन दाता हे हिमालय चिरस्थाई बने रहो
वृक्षों की चादर को ओढ़े
पशु-पक्षी आवास तुम्हीं से
नई चेतना के वाहक तुम
ताकत का अहसास तुम्हीं हो
जीवन दाता हे हिमालय चिरस्थाई बने रहो
नदियों की धारा में तुम हो
बादल का श्रृंगार तुम्हीं से
कवियों की कविता में तुम हो
जीवन नैय्या पार तुम्हीं से
जीवन दाता हे हिमालय चिरस्थाई बने रहो

गंगा महिमा

हे गंगा तुम हो भारत का वरदान
निर्मल धारा शीतल पानी
श्वेत श्याम परिधान
हिम शिखरों से चलती हो तुम
जाती चारों धाम
हे गंगा तुम हो भारत का वरदान
जहाँ-जहाँ पर पग रखती हो
जिधर-जिधर को रूख करती हो
पालनकर्ता हो पूरे भारत की
ईधर-उधर के दुःख हरती हो
हे गंगा तुम हो भारत का वरदान
सकल विश्व में तेरे जैसी नहीं है कोई सरिता
भारत की आत्मा हो गंगा
गर्व करे तुम पर तिरंगा
है जग में प्रसिद्ध तेरा नाम
हे गंगा तुम हो भारत का वरदान
तेरी अविरल धारा गंगा
जग को जीवन देती है
ऐसी निर्मल काया तेरी
सबके दुःख हर लेती है
हे गंगा तुम हो भारत का वरदान
लहराती हैं फसलें देखो
तेरा है उपकार
जीवन जीते भारतवासी
देखो तेरा प्यार
हे गंगा तुम हो भारत का वरदान
दुःखी किया है हमने तुमको
तुमको कूड़ादान बनाया
फिर भी सोचा गंगा तुमने
हो भारत का उत्थान
हे गंगा तुम हो भारत का वरदान
तुमसे ही होता प्रभात है
तुमसे ही होती है शाम
किस प्रकार से दे सकते हैं
हम तुमको सम्मान
हे गंगा तुम हो भारत का वरदान

नदी बचाओ

आओ नदी बचाने आओ
आकर अपना फर्ज निभाओ
नदियों में बसता है जीवन
नदियों से चलता है जीवन
नदियों से फैली हरियाली
तुम भी आओ सबको लाओ
आओ नदी बचाने आओ
आकर अपना फर्ज निभाओ
नदियों से जीते हैं पक्षी
नदियों में दिखती है संस्कृति
नदियों से मिलता है ज्ञान
तुम भी नदी प्रेम दिखलाओ
आओ नदी बचाने आओ
आकर अपना फर्ज निभाओ
नदियों से मिलती है रोटी
नदियों से होती है खेती
नदियों से बनती है बिजली
अब नदियों को स्वच्छ बनाओ
आओ नदी बचाने आओ
आकर अपना फर्ज निभाओ
नदियों से मिलता है पानी
नदियों में जीती है मछली
नदियों से बनता है सागर
अब नदियों की शान बचाओ
आओ नदी बचाने आओ
आकर अपना फर्ज निभाओ
नदियों से आया है जीवन
नदियों से आया है ज्ञान
नदियों से चली है सभ्यता
नदी ज्ञान को और बढ़ाओ
आओ नदी बचाने आओ
आकर अपना फर्ज निभाओ
नदियों से मिलती है सुख सम्पति
नदियों से राष्ट्र बने धनवान
नदियों से मिलती खुशहाली
देश राष्ट्र को सुखी बनाओ
आओ नदी बचाने आओ
आकर अपना फर्ज निभाओ
नदियों से मिटती दरिद्रता
नदियों से मिटते हैं रोग
नदियों से उन्नति होती है
जन-जन में चेतना लाओ
आओ नदी बचाने आओ
आकर अपना फर्ज निभाओ

संपर्क करें:
श्री जमुना प्रसाद तिवारी,
ग्राम- हाट, पो.द्वारहाट
जिला-अलमोड़ा-263653, उत्तराखंड
मो.न.: 09410304040